



SMT. KRISHNAMMAL JAGANNATHAN

Smt. Krishnammal Jagannathan is a social activist from Tamil Nadu.

2. Born on 16th June, 1926, Smt. Krishnammal is a legend among the people of Tamil Nadu and worldwide. From an early age, she was inspired by the great Tamil Saint Ramalinga Vallalar, who saw a divine light within every human heart, regardless of race, creed, nationality, class, or caste. Her efforts on behalf of the poor are a living link with Mahatma Gandhi and Vinoba Bhave, still being realized by hundreds of thousands of marginalized in India. Amma, a nonagenarian, defies her age, travelling to remote rural areas bringing social, economic, and political transformation through the pragmatic application of the philosophy of non-violent action.

3. Smt. Krishnammal was the first women to graduate from her village and accompanying Mahatma Gandhi on his tour of Madurai in 1946 was a unique experience for her while at the American College. Another significant influence was her life-partner S. Jagannathan, with whom she established Gandhian Constructive Workers Home to train young people to fulfill the dream of 'Gram Swaraj' in post-independent India. At the Constructive Workers Home, she had hosted luminaries such as Vinobha Bhave, Jawaharlal Nehru, David Ben-Gurion, Sunderlal Bahuguna, as well as Martin Luther King Jr, Coretta Scott King, and John Lewis, who brought Gandhian approaches to Civil Rights struggles in the United States. From 1952-1958, she joined the Bhoodan and Gramdan padayatras of Vinoba Bhave, spearheading the movement in Tamil Nadu along with Jegannathan.

4. The massacre of 44 Dalit women on 25th December 1968 in Kilavenmani village, Thanjavur District over a wage-dispute was a life-changing event for Smt. Krishnammal. Empowering Dalit women to become landowners and entrepreneurs became her life mission. While she organized women to offer satyagraha her life-partner S. Jagannathan undertook long fasts to solve the conflict between landlords and bonded laborers. Following the call of Jayaprakash Narayan, she tirelessly worked in Bihar to liberate 26,000 women from slavery and redistributed 24,000 acres of land to them.

5. Continuing the mission to empower the poor, especially women, Smt. Krishnammal and Shri Jagannathan founded 'Land for Tillers' Freedom (LAFTI), a non-profit organization, to experiment an innovative approach to bring landowners, bank officials, government agencies for rural development and landless poor on to the same platform for peaceful transfer of landownership. Through she efforts, more than 15,000 Dalit families were not only liberated from bonded labor but have become entrepreneurs and masters of their own destiny. Even before the climate change issues caught the global attention, she and Shri Jagannathan highlighted the destruction of costal-ecosystem due to proliferation of prawn farms, and the Supreme Court of India vindicated the stand, by enacting laws to protect coastal regions of the entire South India. A new era of ecological awareness had arrived. The Great Tsunami of 2004 posed another challenge, thousands of families became homeless overnight. Undeterred, she formed women self-help groups who built their own houses by establishing brickmaking units and contributing labor which caught the attention of government agencies, who supported this people participatory efforts. The Cyclone Gaja in 2018, had strengthened her determination to give safe shelter to every woman in the East Tanjavur district, the rice bowl of Tamilnadu.

6. Smt. Krishnammal has received awards and recognition from Italy, Germany, England, Denmark, Norway, Sweden, Austria, and the United States, an inspiration for others to emulate and an example of what is possible through a lifetime commitment. Some of the prestigious awards and prizes are Right Livelihood Award, the "Alternative Nobel Prize," Padma Shri, Bhagwan Mahaveer Award and the Jamnalal Bajaj Award.





श्रीमती कृष्णम्माल जगन्नाथन

श्रीमती कृष्णम्माल जगन्नाथन तमिलनाडु की एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

2. 16 जून, 1926 को जन्मी, श्रीमती कृष्णम्माल तमिलनाडु और दुनिया भर के लोगों के बीच एक प्रख्यात शख्सीयत हैं। कम उम्र से ही, वह महान तमिल संत रामलिंग वल्लालर से प्रेरित थी, जो जाति, पंथ, राष्ट्रीयता, वर्ग या जाति ऊपर हर मानव हृदय के भीतर एक दिव्य प्रकाश को देखा करते थे। गरीबों के प्रति उनके प्रयास, महात्मा गांधी और विनोबा भावे के साथ जीवंत रूप से जुड़े हुए हैं, और उनका फायदा अभी भी हाशिए पर पड़े लाखों भारतीयों द्वारा उठाया जा रहा है। नब्बे वर्षीय अम्मा अपनी उम्र को दरकिनार करते हुए, दूर दराज के गांवों की यात्रा करती हैं और अहिंसावादी विचार को व्यावहारिक धरातल पर उतारकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन ला रही हैं।

3. श्रीमती कृष्णम्माल अपने गाँव से स्नातक बनने वाली पहली महिला थीं। 1946 में मदुरै दौरे पर महात्मा गांधी का सान्निध्य उनके लिए एक अनूठा अनुभव था। उस समय वह अमेरिकन कॉलेज में अध्ययन कर रही थीं। उन पर एक और खास प्रभाव उनके जीवनसाथी एस. जगन्नाथन का था, जिनके साथ उन्होंने आजादी के बाद भारत में 'ग्राम स्वराज' के सपने को साकार करने के लिए युवाओं के प्रशिक्षण हेतु गांधीवादी कंस्ट्रक्टिव वर्कर्स होम की स्थापना की। कंस्ट्रक्टिव वर्कर्स होम में, उन्होंने विनोबा भावे, जवाहरलाल नेहरू, डेविड बेन–गुरियन, सुंदरलाल बहुगुणा तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में नागरिक अधिकार संघर्षों के लिए गांधीवादी विचारधारा को अपनाने वाले मार्टिन लूथर किंग जूनियर, कोरेटा स्कॉट किंग और जॉन लेविस जैसे दिग्गजों की मेजबानी की थी। 1952–1958 तक, वह विनोबा भावे के भूदान और ग्रामदान पदयात्राओं में शामिल हुईं और जगन्नाथन के साथ तमिलनाडु में इन आंदोलनों की अगुवाई की।

4. 25 दिसंबर, 1968 को तंजावुर जिले के किलावेनमनी गाँव में मजदूरी–विवाद को लेकर 44 दलित महिलाओं का नरसंहार, श्रीमती कृष्णम्माल के लिए जीवन को हिला देने वाली घटना थी। दलित महिलाओं को जमीन का मालिक और उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करना उनके जीवन का मिशन बन गया। उन्होंने सत्याग्रह के द्वारा महिलाओं को संगठित किया तो उनके जीवनसाथी एस. जगन्नाथन ने जमींदारों और बंधुआ मजदूरों के बीच संघर्ष को सुलझाने के लिए लंबा अनशन किया। जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर चलते हुए, उन्होंने बिहार में 26,000 महिलाओं को गुलामी से मुक्त करने के लिए अथक प्रयास किया और उन्हें 24,000 एकड़ भूमि का पुनर्वितरण किया।

5. गरीबों, खासकर महिलाओं को सशक्त बनाने के मिशन को जारी रखते हुए, श्रीमती कृष्णम्माल और श्री जगन्नाथ ने एक अभिनव प्रयोग के तहत एक गैर–लाभकारी संगठन 'लैंड फॉर टिलर्स फ्रीडम (एलएएफटीआई) की स्थापना की। इसका मकसद भूमि के मालिकाना हक के शांतिपूर्ण हस्तांतरण के लिए भूमि अधिग्रहणकर्ताओं, बैंक अधिकारियों, ग्रामीण विकास से जुड़ी सरकारी एजेंसियों और भूमिहीन गरीबों को एक मंच पर लाना था। उनके प्रयासों से 15000 से अधिक दलित परिवार न केवल बंधुआ मजदूरी से मुक्त हुए बल्कि उद्यमी और अपने भाग्यविधाता बन गए हैं। जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर वैश्विक ध्यान आकृष्ट होने से पहले ही श्रीमती कृष्णम्माल और श्री जगन्नाथ ने झींगा फार्मों के प्रसार के कारण तटीय–पारितंत्र के विनाश पर प्रकाश डाला और भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने पूरे दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों की रक्षा के लिए कानून बनाकर, इसका समर्थन किया। पारिस्थितिक जागरूकता का एक नया युग आ गया था। 2004 की महासुनामी ने एक और चुनौती पेश की, हजारों परिवार रातों–रात बेघर हो गए। इससे विचलित हुए बिना, उन्होंने ने महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का गठन किया, जिन्होंने ईंट बनाने वाली इकाइयाँ स्थापित करके और श्रम का योगदान देकर अपने घरों का निर्माण किया। सरकारी एजेंसियों का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने लोगों के इन भागीदारी प्रयासों में सहयोग दिया। 2018 में चक्रवात गाजा से तमिलनाडु के चावल उत्पादक पूर्वी तंजावुर जिले की हर महिला को सुरक्षित आश्रय देने का उनका संकल्प और मजबूत हुआ।

6. श्रीमती कृष्णम्माल को इटली, जर्मनी, इंग्लैंड, डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, ऑस्ट्रिया और संयुक्त राज्य अमेरिका से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए है। वह दूसरों के लिए अनुकरणीय प्रेरणास्रोत हैं और इस बात की मिसाल हैं कि आजीवन प्रतिबद्धता के द्वारा सब कुछ संभव है। उन्हें प्रदान किए गए कुछ प्रतिष्ठित पुरस्कारों में राइट लाइवलीहुड अवार्ड, "अल्टरनेटिव नोबेल प्राइज," पद्म श्री, भगवान महावीर पुरस्कार और जमनालाल बजाज पुरस्कार शामिल हैं।